“चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 7 जुलाई 2018 को ग्राम पंचायत ठंगी, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा वित्त पोषित परियोजना “मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता” के तहत **“चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान”** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत ठंगी के 43 किसानों एवं बागवानों ने भाग लिया ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी, जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), कुमारी रतन मंजरी नेगी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर, श्री एस. पी. नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, ठंगी, वन अधिकारियों तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन तथा स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह अपनी स्वादिष्ट एवं पोषक गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों पर पाया जाता है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20

हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है,परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग परिचित नहीं हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएँगे और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया की वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

इस अवसर पर प्रधान ग्राम पंचायत, ठंगी, अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा की पैदावार को बढ़ाने के लिए शाखाओं की अत्यधिक कटाई से चिलगोजा के वृक्षों को हो रही क्षति को रोकना होगा क्योंकि इस क्षेत्र के लोग आर्थिक रूप से चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं । उन्होंने यह भी कहा कि चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने जो चिलगोजा के तुडान पर इतनी दूर आकार चिलगोजा को एकत्रित करने के दोरान हो रही क्षति के बारे में बताया तथा वैकल्पिक उपकरण के प्रयोग की आवश्यकता की जानकारी दी उससे उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी, जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) ने अपने संबोधन में कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है व कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है । इस कड़ी में बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना “चिलगोजा” के अंतर्गत आज इस महत्वपूर्ण

विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा भविष्य में बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला को इस महत्वपूर्ण विषय पर जिला किन्नौर के किसानों तथा बागवानों को प्रशिक्षण देने तथा जागरूक करने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोज़ा संरक्षण से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी किसानों एवं बागवानों को दी गई। डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में 'चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

कुमारी रतन मंजरी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा वृक्षों का किन्नौर के लोगों कि आर्थिक विकास एवं रीति रिवाजों में महत्वपूर्ण योगदान है तथा यहाँ के लोग चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं। उन्होंने लोगों से चिलगोजा के शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान वृक्षों को हो रही क्षति को रोकने के लिए आगे आने को कहा तथा उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को विशेष तौर पर इसके संरक्षण के लिए आगे आना होगा क्योंकि महिलायें चिलगोजा एवं इससे सम्बंधित रीति रिवाजों से अत्यधिक जुड़ीं हुई हैं। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक को इस महत्वपूर्ण विषय पर जिला किन्नौर के किसानों एवं बागवानों को प्रशिक्षण देने तथा जागरूक करने के लिए धन्यवाद किया।

श्री लाल सिंह नेगी, वन परिक्षेत्र अधिकारी एवं श्री नीमा छेरिंग, वन खंड अधिकारी मूरंग वन परिक्षेत्र ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया। इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारी के समक्ष रखी एवं वन अधिकारी ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

कुमारी वर्षा परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये' के बारे में लोगों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर इस तकनीक का प्रदर्शन किया । इसी दौरान चार मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान की गई ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) किन्नौर, कुमारी रतन मंजरी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर, श्री एस. पी. नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, ठंगी, पंचायत सदस्यों, वन अधिकारियों तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया ।

NABARD
(Cones)

****